Advanced International Journal for Research (AIJFR)
E-ISSN: 3048-7641 ● Website: www.aijfr.com ● Email: editor@aijfr.com

प्राचीन भारत में नारी शिक्षा

सिम्पल कुमारी

इतिहास एवं पुरातत्व विभाग, चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय, सिरसा (हरियाणा)

शोध–सार

भारतीय संस्कृति में स्त्रियों को सदैव से ही अत्यंत सम्मानजनक एवं प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त था। किसी भी समाज एवं राष्ट्र की प्रगति और समृद्धि का मापक उसकी स्त्रियों की स्थिति होती है, यदि नारी शिक्षित है तो वह न केवल अपने परिवार को बल्कि समाज की संपूर्ण चेतना, दिशा और गति को निर्धारित करने वाला आधार है। भारत एक विकासशील देश है, इस सभ्यता के समुचित ज्ञान के लिए शिक्षा पद्धति का अध्ययन करना आवश्यक है, जिसने इस सभ्यता को चार हजार वर्षों से भी अधिक समय तक सुरक्षित रखा। इसका प्रचार–प्रसार किया। भौतिक तथा आध्यात्मिक उत्थान तथा विभिन्न उत्तरदायित्व के निर्वाह के लिए शिक्षा की महत्ता को सदा स्वीकार किया गया। मनुष्य जब बर्बर एवं जंगली स्वरूप में रहा तब भी शिक्षा किसी न किसी रूप में विद्यमान रही होगी, लेकिन अपरिपक्व व अविकसित थी।

विद्या सम्बन्धी समस्त गुणों को निरूपण करने पश्चात् भारतीय मनिषियों ने घोषित किया कि विद्या विहीन मनुष्य पशु तुल्य है। वैदिक युग से ही शिक्षा को प्रकाश का स्त्रोत माना गया है, इस काल में नारी को पुरूषों के समान ही शिक्षा का अधिकार प्राप्त था, वेदों का अध्ययन करे, शास्त्रों में पारंगत हो और समाज में विचारक की भूमिका निभाए। उच्च वर्ग की महिलाएं गार्गी, मैत्रेयी, घोषा, लोपमृदा इस युग की उपलब्धियां थी। गार्गी वृहदारण्यक उपनिषद में याज्ञवलक्य के साथ दार्शनिक संवाद। कुछ वैदिक धर्मसूत्रीय परम्पराओं और बाद के ग्रंथों में कन्याओं के उपनयन अथवा ब्रह्मचर्य से सम्बन्धित उल्लेख मिलता है।

प्राचीन समय में शिक्षा केवल पुस्तकीय ज्ञान या उपाधि तक सीमित न रहकर अनेक प्रकार से जैसे औपचारिक शिक्षा– वेद, धर्म, व्याकरण साहित्य। व्यवहारिक/कलात्मक शिक्षा–संगीत, नृत्य, चित्रकला, ग्रह प्रबंधन आदि। धार्मिक शिक्षा–धार्मिक अनुष्ठान, दर्शन, तप, आध्यात्मिक ज्ञान है। राजपरिवार की कन्याओं को सैनिक एवं प्रशासनिक, राजकीय आदि शिक्षा भी दी जाती थी। ऐसे महिलाओं के उल्लेख मिले है, जिसने आवश्यकता पर कुशल प्रशासनिक क्षमता का परिचय दिया। सातवाहन राजवंशी नागनिका ने अपने पति की मृत्यु के पश्चात् अपने अल्पवयस्क पुत्रों की संरक्षिका बनकर कुशलतापूर्वक शासन किया। गुप्त काल में कुमारदेवी के सिक्कों से पता चलता है कि इन्हें राजकीय संरक्षण प्राप्त था।

वात्सायन के कामसूत्र में 64 कलाओं का उल्लेख सुंस्कृत महिलाओं के लिए अनिवार्य बताया गया है, इसके अतिरिक्त कादंबरी शुक्र नितिसार, ललितविस्तार आदि में 64 कलाओं का उल्लेख है। प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति का उद्देश्य– चरित्र निर्माण, ब्रह्मचर्य का पालन, आत्मसंयम का विकास, शिक्षा में आध्यात्मिक भावना, शिक्षा द्वारा व्यक्तित्व निर्माण, विकास और उन्नति, समाज के प्रति उत्तरदायित्व, प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं परम्पराओं की रक्षा आदि।

प्राचीन भारत में नारी शिक्षा, वैदिक काल व उसके विकासक्रम गुप्तकाल तक प्रस्तुत करना है कि उस समय महिला शिक्षा उच्च वर्ग की महिलाओं तक सीमित था व समय के साथ–साथ परिवर्तनशील रही थी।

विशेष शब्दः प्राचीन भारत, नारी शिक्षा, वैदिक सभ्यता, स्त्रोत आदि।

भूमिका :

नारी शिक्षा भारतीय सभ्यता और संस्कृति का महत्वपूर्ण आयाम है, यह अत्यंत प्राचीन है, परंतु यह परम्परा के साथ अनेक उतार–चढ़ावों से गुजरी है। यदि इस इतिहास का दर्पण देखें तो अनेक पाएंगे कि स्त्री शिक्षा की स्थिति समय के साथ परिवर्तनशील रही है। शिक्षा में धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितियों ने स्त्री शिक्षा को किस प्रकार प्रभावित किया है। इस समय शिक्षा का मुख्य ज्ञान भौतिक ही नहीं बल्कि आत्मिक व मानसिक विकास भी था, जहां गुरू के निदेशन में शिष्य अपने जीवन के महत्वपूर्ण विषयों का अध्ययन करते थे हालांकि इस परंपरा में महिलाओं के लिए शिक्षा के अवसर सीमित थे लेकिन कुछ विशेष रूप से महिलाओं ने ज्ञान प्राप्त किया और समाज में महत्वपूर्ण स्थान बनाया।

ऋग्वेद में लोपा, मृदा, विश्ववारा, अपाला आदि मंत्रदृष्टि ऋषिकाओं का उल्लेख है। ऋग्वेद में श्रद्धा सुक्त की रचयिता कामयानी का उल्लेख है। अर्थववेद में पृथ्वीसूक्त व भूमिसूक्त में भूमि को माता कहा गया है। महाभारत में शिक्षा के महत्व का वर्णन किया गया है। ''नास्ति विद्यासयम चक्षु नास्ति सत्यसम, तप, सा विधाया विमुक्ते' अर्थात् इसे मोक्ष का साधन माना गया है।[1]

इसे प्राचीन समय में नारी शिक्षा का अलग–अलग कालों में परिवर्तनशील व इसके महत्व अलग–अलग कालों में इनका विकासक्रम रहा। प्राचीन भारतीय साहित्य तथा विदेशी यात्रियों के विवरण से पता चलता है कि वेद 4, वेदांग 6, 14 विधाएं, 18 शिल्प, 64 कलाएं प्रमुख सम्मिलित हैं।

इस अध्ययन में प्राचीन भारत की महिलाओं का शिक्षा में योगदान व भूमिका किस प्रकार रही व सभी कालों में नारी शिक्षा किस तरह परिवर्तनशील रही।[2]

वैदिक काल से गुप्तकाल तक नारी शिक्षा

ऋग्वेद

वैदिक युग में सभी को बिना भेद–भाव के पुरूषों के समान शिक्षा का अधिकार प्राप्त था। ज्ञान और शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी थी एवं किसी भी दृष्टि में पुरूषों से कम नहीं थी। ऋग्वेद में कुछ विदुषियों के प्रमुख दृष्टा ऋषिकाओं के प्रमाण निम्नवत दृष्टवा हैं :–

नाम	ऋग्वेद मण्डल	सूक्त	मंत्र
लोपमृदा	1	179	1.6
श्रध्दा	10	151	1.5
अपाला	8	91	1.7
धोषा	10	3940	1.7

इन ऋषिकाओं के अतिरिक्त अन्य ओर भी ऋषिकाओं के नाम आदरपूर्वक प्रयुक्त किया गया है। ऋतसंहिता के प्रथम मण्डल का सूक्त 32वां साक्षी है कि युद्ध के मैदान में स्त्रियां भी जाती थी। योद्धा स्त्रियों में शशीयसी, विश्पला, मृदगलानी एवं वधीमती का उल्लेख है। विश्यला रणक्षेत्र में भागी थी। ऋग्वेद में एक स्थान युद्ध कौशल में प्रवीण मृदगलानी का उल्लेख है जिन्होंने अपने रण कौशल से शत्रु सेना को भागने पर विवश किया था। वेद की नारी–विदुषी, प्रकाश से परिपूर्ण, आदर्शमाता, संतान की प्रथम शिक्षिका, अध्यापिका, शिल्पविद्या, पशुपालन, व्यापार में योगदान करती है। वेदों में नारी को शिक्षित करने के अनेक मंच हैं जो प्रमाणित करते हैं कि वैदिक कालीन महिला शिक्षित प्रमाणित है।[3]

उत्तरवैदिक / उपनिषद

यजुर्वेद में कहा गया है कि कन्या का विवाह ब्रह्मचर्य अवस्था समाप्त करने पश्चात् ही करना चाहिए। अथर्ववेद में भी स्पष्ट रूप से कहा है कि विवाहोपरान्त वही स्त्री सफल है जिसने ब्रह्मचर्यवस्था में अपनी

शिक्षा–दीक्षा ठीक प्रकार से पूर्ण की हो। शतपथ ब्राह्मण स्त्रियों को यज्ञ करने एवं वैदिक ग्रंथ पढ़ने का अधिकार देता है। यजुर्वेद 11/36, 6/14, 11/59 में नारी को शिक्षा का अधिकार दिया गया है।[4]

मैत्रेयी, गार्गी, अत्रेयी एवं काशकृत्सनी आदि थी जिसने धर्म एवं दर्शन में निपुणता पा ली थी। काशकृत्ज्ञानी ने मीमांसा के एक ग्रंथ का प्रणयन किया था। के.सी. श्रीवास्तव पुस्तक में कहा गया है कि कन्या की शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाता था, ब्रह्मचर्य आश्रम में रहते हुए अध्यापन करती थी।

उपनिषद में वर्णित मैत्रेयी, गार्गी नामक स्त्रियां ज्ञान में निपुण थी। याज्ञवलक्य की पत्नी मैत्रेयी अत्यंत विदुषी एवं ब्रह्मवादिनी महिला थी जिन्होंने सांसारिक सुखों का त्याज्य किया एवं अपने जीवन को आध्यात्मिक चिन्तन की ओर समर्पित किया। मैत्रेयी–वृददारण्यक उपनिषद में याज्ञवलक्य के साथ आत्मा/अमरत्व संबंधी संवाद। गार्गी ने अपनी विलक्षण प्रतिभा, अद्भुत तर्कशक्ति मेघा और सूक्ष्म चिन्तन के अचूक बाणों की बौछार विदेहराज जनक की सभा में याज्ञवलक्य जैसे प्रकाण्ड विद्वान को परास्त कर अपनी विद्वता की ध्वजा स्थापित की। इस युग में दो प्रकार की महिलाएं थी– एक सधोदहा और दूसरी ब्राह्मवादिनी। सधोदहा विवाह होने के पहले तक ब्रह्मचर्य व्रत का अनुसरण करती थी तथा ब्रह्मवादिनी जीवन पर्यन्त ज्ञानर्जन करते हुए ब्रह्मचर्य का पालन करती थी। अध्यापन का कार्य करने वाली स्त्रियां 'आचार्य और उपाध्याया' कही जाती थी। कुलीन परिवर की कन्यायें ही शिक्षा प्राप्त कर सकती थी। अब शिक्षा कन्याओं को घर में ही दी जाने लगी थी। वह पिता, चाचा, भाई से ही शिक्षा ग्रहण करती थी।[5]

महाकाव्यकाल

महाकाव्यों के अध्ययन से हमें इस समय की नारी शिक्षा की महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। रामायण और महाभारत के स्त्री पात्रों कौशल्या, कैकेयी, सीता, सुभद्रा, रूक्मिणी आदि के वर्णन मिलते हैं। रामायण में राम के युवराज पद पर अभिषेक के समय कौशल्या द्वारा बाली के कुछ युद्ध के प्रस्थान से पूर्व तारा द्वारा यज्ञ करने का उल्लेख मिलता है, इससे अर्थ है कि महाकाव्य काल तक स्त्रियां वेदज्ञ थी। सीता नित्य संध्या पूजा करती थी, सीता के चरित्र को महिलाओं के शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण को उजागर करता है, जहां उन्हें उच्च नैतिक शिक्षा और धार्मिक ज्ञान प्राप्त था। कैकेयी युद्ध कौशल, अस्त्र–शस्त्र चलाने में निपुण थी।

महाभारत में सुलभा को जीवन पर्यंत वेदांत का अध्ययन करते हुए दर्शित कराया गया है। महाभारत की नारी का कार्यक्षेत्र मुख्यतः घर था। कन्या को ब्राह्मणों द्वारा, घर आए मनिषियों, गुरूजन अथवा नियुक्ति उपाध्याय द्वारा दी जाती थी। द्रौपदी, शकुंतला आदि को अनेक उपएसान कंठस्थ थे। कर्ण के उत्सर्ग के समय अनेक देवताओं की प्रार्थना करते हुए कुन्ती ने कर्ण 'स्वस्ति' की कामना की थी। गांधारी अर्थशास्त्र में पारंगत थी।[6]

शतपथ ब्राह्मण ग्रंथ में स्त्रियों के लिए ललित कलाओं का उल्लेख है– नृत्य, संगीत और वाद्य महत्वपूर्ण माने जाते थे। उत्तरा ने अर्जुन से नृत्य शिक्षा प्राप्त की थी। शुक्र ने भी अपनी पुत्री देवयानी को संगीत, नृत्य आदि में निपुण किया। महाभारत और रामायण जैसे महाकाव्यों और धार्मिक ग्रंथों में महिलाओं की शिक्षा के संदर्भ में दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है। डॉ. मीरजादे (1945) ने महाभारत में द्रौपदी के व्यक्तित्व का विशलेषण करते हुए दिखलाया कि वह केवल एक पत्नी नहीं बल्कि एक विदुषी और प्रभावशाली नेता थी। रामायण में सीता के शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण उजाकर किया, जहां उन्हें उच्च नैतिक शिक्षा और धार्मिक ज्ञान प्राप्त था।

मार्केण्डय पुराण में ब्रह्मवादिनी मदालसा का उल्लेख है जिसने अपने पुत्र अलर्क को बचपन से ही ब्रह्मज्ञान का उपदेश दिया।[7]

बौद्ध–जैन काल

बौद्ध परंपाराओं से विदित होता है कि स्त्रियां सुशिक्षित हुआ करती थी। संघमित्रा लंका जाकर बौद्ध शिक्षा के प्रचार में संलगन हुई। सुभा, अनोपमा, उमरा आदि विदुषी स्त्रियां थी जो दर्शन में पारंगत थी। खेमा तत्कालीन उच्च शिक्षित नारी की विनय में पारंगत, खेमा की विद्वता, बुद्धिमता, प्रतिभा की प्रशंसा सुनकर कौशल नरेश

प्रसेनजीत ने स्वयं जाकर उनसे दार्शनिक विचारों पर विचार–विमर्श किया। थेरीगाथा में 32 आजीवन ब्रह्मचारिणीयों का तथा 18 विवाहोपरान्त दीक्षित हुई थेरियों का उल्लेख है। देवदत्ता गणिका 18 देशों की भाषा में विशारद थी। बौद्ध युगीन शिक्षा प्रणाली में गुरूकुलों का स्थान संघों ने ले लिया था। सिगालोवाद में उपासक/उपासिका को सम्मिलित रूप से शाक्य पुत्रीय कहा गया है। बौद्ध शिक्षा के प्रमुख केंद्र बौद्धमठ या विहार होते थे। इसके संघ, पवज्जा, उपसम्पदा, भिक्षु–भिक्षुणी तथा बौद्धिक नियम आदि शिक्षा पद्धति संचालित की जाती थी।[8]

जैन परंपराओं में उल्लिखित है कि जयन्ती, सहस्त्रानीक आदि महिलाएं विदुषी थी। उपाध्याय की पत्नी को उपाध्यानी तथा आचार्य की पत्नी को आचार्यानी कहा जाता था। अध्ययन करने वाली छात्राओं को 'अध्येत्री' के नाम से सम्बोधित किया जाता था। ललित कलाओं की शिक्षा भी ग्रहण करती थी। राजा रूद्रायन की पत्नी चन्द्रप्रभा प्रसिद्ध नृत्यांगना थी। पंतजलि ने औदमेध नामक आचार्य का उल्लेख किया है। उससे पढ़ने वाले छात्र, 'औदमेध' कहलाते थे। छात्र–शालाओं में छात्राएं शिक्षा ग्रहण करती थी।[9]

डॉ. शांता (1965) ने अपने अध्ययन में बताया कि बौद्ध और जैन धर्म में महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने की समानता थी। वह यह साबित करती है कि बौद्ध भिक्षुणियां और जैन साध्वियां न केवल धार्मिक कार्यों में सक्रिय थी, बल्कि शिक्षा के क्षेत्र में भी इनका योगदान था। बौद्ध धर्म में महिलाओं के लिए विशेष रूप से धर्मशालाओं और शिक्षा केन्द्रों की व्यवस्था की गई थी, जहां वे धार्मिक और दार्शनिक शिक्षा प्राप्त करती थी।[10]

मौर्य काल

इस काल में महिलाओं को सैन्य, गुप्तचर, अंगरक्षक, नैतिक, प्रशासनिक, कुशल व्यवसाय आदि शिक्षाएं दी जाती थी। मौर्य काल में नारी शिक्षा समाज के उच्च और राजसी वर्गों में काफी उन्नत थी। चन्द्रगुप्त के समय महिलाओं को शस्त्र कला और युद्ध कौशल में दक्ष किया जाता था। गणिकाओं की शिक्षा नृत्य, संगीत, श्रृंगार, गाना, बजाना आदि कार्यों में इन्हें निपुण किया जाता था। मौर्य काल में स्त्री को विशेष समान दिया जाता था। वह धार्मिक कार्यों में सम्मिलित होती थी एवं राजकीय कन्याओं को राजनीतिक, धार्मिक, प्रशासनिक शिक्षा दी जाती थी। संभ्रांत परिवारों की स्त्रियां घरों में रहती थी जिसे कौटिल्य ने अनिष्कासिनी कहा है जिससे पता चलता है कि घरों में भी शिक्षा दी जाती होगी।[11] कौटिल्य अर्थशास्त्र द्वितीय अधिकरण 23/2

नारियों को साहित्य क्षेत्र में अध्ययन का अधिकार दिया जाता है। बालिकाओं के लिए शिक्षा का उद्देश्य उन्हें उत्तम गृहणी और श्रेष्ठ माता बनाना है। आचार्य कौटिल्य के अनसार विद्या आन्वीक्षकी अर्थात् आत्मविधा, तीनों वेद (ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद) वार्ता (कृषि एवं पशुपालन सम्बंधी ज्ञान। तथा दंडनीति को ही विधा कहा जाता है।

कौटिल्य की शिक्षा विधि के सात पद –

1. शुश्रूषा – विद्यार्थी में आचार्य से ज्ञान प्राप्ति करने की इच्छा।
2. श्रवणम – आचार्य से पाठ को सुनना।
3. ग्रहणम – सुने पाठ का स्मरण करना।
4. धारणम – ग्रहण किये पाठ का स्मरण और चिंतन करना।
5. अपोह – पढ़े हुये पाठ पर आचार्य से प्रश्नौतर पर वाद–विवाद करना।
6. विज्ञान – पाठ के अर्थों को समुचित रूप से जान लेना।
7. तत्वाभिनिवेश – अधीत विधा को प्रयोग में लाना।

अशोक द्वारा धार्मिक व नैतिक शिक्षा मठों व विहारों में दी जाती थी।

अर्थशास्त्र में गणिकाओं का उल्लेख है। इस वर्ग की महिलाओं में अभिनेत्री, नर्तकी, गायिका, गुप्तचर, राजकीय संरक्षण, प्रशासिका आदि सम्मिलित थी। इस काल में उच्च वर्ग व शाही परिवार की कन्याओं को शिक्षा दी जाती थी व शिक्षा का अधिकार प्राप्त था।[12]

गुप्तकाल

गुप्तकाल की नारी प्राचीन भारतीय स्त्रोतों के आधार पर उकेरा गया एक बिम्ब है। इस काल की नारी यथार्थ ठोस धरातल पर अपने लक्ष्य के प्रति संघर्षरत जीवन को जीने योग्य बनाने में व्यस्त और सभ्यता के कर्मिक विकास से जुड़ी है। गुप्त शासक स्वयं ही महिलाओं का सम्मान करते थे। गुप्तकालीन इतिहास के स्त्रोत के रूप में मुद्राएं, अभिलेख, लौकिक मूर्तियां, ग्रंथ आदि से भी नारी शिक्षा की जानकारी मिलती है। गुप्तकाल अभिलेखों से ज्ञात होता है कि गुप्तकाल में नारी समृद्ध वर्ग हिन्दु एवं जैन नारियों ने मन्दिर, धर्मशाला व अनाथालय बनवाने में अपना योगदान दिया। कुमारदेवी का नाम सिक्कों पर उत्कीर्ण किया गया है, जिससे स्पष्ट है कि वह बराबर की स्वामिनी थी। सामान्य जनक नारियां भी इनसे प्रेरित एवं संतोषजनक रही होंगी उन्हें भी शिक्षा दी जाती थी। विधोतमा जो कालिदास की पत्नी थी, जो स्वयं विदुषी थी और कालिदास को ज्ञानर्जन में लगाने की प्रेरणा बनी थी। कालिदास के अभिज्ञानशाकुंतलम में अनुसूया को इतिहास का ज्ञाता कहा गया है।[13] अमरकोष में शिक्षिकाओं के लिए उपाध्याया एवं आचार्य शब्द आये है। गुप्तकाल के साहित्य, कला और विज्ञान के विकास में देश की महिलाओं ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।[14] राजा, सामंतगण, पुरोहित, सेनापति या सगे सम्बन्धी उन प्रजाति के लोग उच्च वर्ग के थे। ऐसे वर्ग की स्त्रियां धार्मिक रूप से जागृत, शिक्षित एवं साहित्य कला के प्रति रूचिवान थी। आश्वलायन ग्रहसूत्र में समावर्तन के संदर्भ में कन्याओं का उल्लेख है। सूत्रकारों में ऐसी कन्याओं का उल्लेख है जो वेदाध्ययन करती थी और अध्ययन की समाप्ति पर समावर्तन संस्कार होता था। मनु ने स्त्रियों के लिए भोजन बनाने, सिलाई आदि की शिक्षा का अनुमोदन किया था। कामसूत्र में जिन 64 कलाओं का उल्लेख है[15] उनमें ललित कलाएं, औपनिषदिक ज्ञान, बुद्धिचातुर्य और क्रीड़ाकौतुक, विज्ञान, घरेलू कार्य, मनोरंजन सम्मिलित थे। पतंजलि के महाभाष्य में भी अनेक स्थलों पर कन्याओं को विद्यार्जन करने का उल्लेख है। पतंजलि के अनुसार व्याकरण का अध्ययन करने वाली को आदिशिला और काशकृत्सा की मीमांसा का अध्ययन करने वाली को 'काशकृत्सा' कहते थे। गुप्तकाल में संस्कृत व प्राकृत भाषओं का प्रचलन था।[16]

निष्कर्ष

इस प्रकार प्राचीन भारत में नारी शिक्षा पद्धति में वैदिक काल से लेकर गुप्तकाल तक निरंतर परिवर्तन होता रहा। प्राचीन काल में छात्रों का उद्देश्य आधुनिक युग की भांति उपाधियों के पीछे दौड़ना नहीं था। वे सच्चे ज्ञान के जिज्ञासु थे, अपने अध्ययन को जीवन पर्यन्त सजोये रखते थे। उनकी प्रबल अभिलाषा देश की सांस्कृतिक विरासत को संजोये रखना था। इस समय शिक्षा सिर्फ पुस्तकीय ज्ञान का भंडार नहीं बल्कि मानसिक विकास, आत्मसंयम में विश्वास, चरित्र निर्माण व अन्य प्रकार से शिक्षा दी जाती थी। शिक्षा प्रायः निशुल्क होती थी। शिक्षा का अधिकार उच्च वर्ग की महिलाओं व शाही घरानों की महिलाओं का अधिकार देखने को मिलता है। सामान्य वर्ग व निम्न वर्ग में इतना विधमान नहीं थी। अतः नारी शिक्षा प्राचीन समय से ही किसी न किसी रूप में विधमान रही है। शिक्षा सिर्फ नारी ही नहीं बल्कि यह समाज एवं राष्ट्र की समग्र प्रगति का आधार है। प्राचीन शिक्षा ने ही भारतीय संस्कृति की विरासत को सुरक्षित रखा तथा उसे समृद्धशाली भी बनाया। प्राचीन शिक्षा के अनेक तत्व आधुनिक शिक्षा पद्धति के लिए भी समान रूप से आदर्श एवं अनुकरणीय बने हुए हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1 उपिन्दर, (2022), सिंह, ***प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन भारत का इतिहास,*** पृ. 201
2 वही, पृ. 338
3 के.सी. श्रीवास्तव, ***प्राचीन भारत का इतिहास व संस्कृति, 2021–22,*** पृ. 763
4 शर्मा, (2018), रामशरण शर्मा, ***भारत का प्राचीन इतिहास,*** पृ. 229
5 के. कृष्ण रेड्डी, (2011), ***भारत का इतिहास,*** पृ. 223
6 सौरभ चौबे, (2021), ***प्राचीन भारत,*** पृ. 213, 267, 407
7 सिंह, डॉ. शांता, ***बौद्ध और जैन धर्म में महिला शिक्षा,*** बनारस धर्म विश्वविद्यालय, 1965
8 डॉ. मीरजादे, ***महाभारत और रामायण में महिला की भूमिका***, दिल्ली; भारतीय अध्ययन परिषद, 1945
9 के.सी. श्रीवास्तव, (2012), ***प्राचीन भारत का इतिहास व संस्कृति,,*** पृ. 88
10 आइवलायत ग्रहसूत्र 1.20.6 11
11 दयानंद सरस्वती, ***वेदों में नारी,*** ऋग्वेद 6/44/18
12 डॉ. कृष्ण कुमार, ***भारत की प्राचीन शिक्षा पद्धति,*** पृ. 169
13 डॉ. कृष्ण कुमार, ***शिक्षा पद्धति वही,*** इतिहास संस्करण, 2008
14 शतपथ ब्राह्मण, 14/3/35
15 एन.सी.आर.टी. पुस्तक
16 आर्य काम्पिटिशन टाइम्स, (2021), ***भारतीय इतिहास,*** पृ. 75, 211